Hindi Reader

हिंदी

हिंदी पाठ्यपुस्तक

लेखिका:
बबीता चौधरी

With the blessings of :

Our Parents

Hindi Reader

हिंदी 8

हिंदी पाठ्यपुस्तक

Copyright @ Publishers

All rights reserved. No part of the publications may be reproduced, transmitted or distributed in any form or by any means without prior permission in written. Any person who does any unauthorised act in relation, Publications may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Limits of liability and Disclaimer of Warranty:
The Authors, Editors, Designers and the Publishers of this book have tried their best to ensure that all the texts are correct in all aspect. However, the authors and the publishers does not take any responsibility of any errors, if happened. The correction of errors, if found will duly be done in the next edition.

MADE IN INDIA

Support Recycle

Save a Tree
Save the Earth

One Ton of this Paper Saves 17 trees

Max Retail Price: On Back Cover

Edited & Designed by:
Editone International Pvt. Ltd.

Based on:

- National Education Policy 2020
- NCF 2022
- Activity Based Format
- Innovative Approach
- Learning with fun
- Eco-Friendly Paper

आमुख

विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सरल एवं स्पष्ट माध्यम भाषा ही है। भाषा में सम्मिलित कौशलों की सहायता से विचारों का आदान-प्रदान संभव हो पाता है। विद्यार्थियों के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में शैक्षिक प्रणाली का अहम् योगदान होता है। इस प्रणाली में रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय मूल्यों तथा जीवन कौशल का समावेश होना आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक शृंखला (कक्षा 1-8) में भाषा के चारों कौशल– श्रवण, वाचन, पठन, लेखन के साथ-साथ गतिविधि आधारित शिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। इस पुस्तक शृंखला में चिंतन-मनन (Thinking), विश्लेषण (Analysis), कल्पनाशीलता (Imagination), रचनात्मकता (Creativity), मूल्यांकन (Evaluation) को भी समाहित किया गया है। इसमें निर्धारित मानक वर्तनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शृंखला विद्यार्थियों की भाषा में बारीक समझ को विकसित करने में सक्षम है। साथ ही इसमें पाठ नियोजन करते समय विद्यार्थियों की रुचियों, जिज्ञासाओं एवं खोजबीन प्रवृति का पूरा ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक शृंखला की पाठ्य-सामग्री बच्चों के स्तरानुकूल, सरल, सहज एवं रोचक रूप में प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत शृंखला में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूपरेखा (NCF) 2022 को ध्यान में रखकर सभी मूल्यों को तार्किक रूप से अपनाया गया है। रचनात्मक लेखन के अंतर्गत कविता, कहानी, चित्र-कथा, संवाद, यात्रा-वर्णन एवं पत्र-लेखन आदि को शामिल किया गया है ताकि भाषा प्रयोग पर विद्यार्थियों की पकड़ मज़बूत बन सके, साथ ही विद्यार्थी व्याकरण का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर पाएँ।

इस शृंखला में विद्यार्थियों को ऐसा मंच देने का प्रयास किया गया है, जहाँ वे आत्मविश्वास के साथ सोच-समझकर प्रश्नों का उत्तर दे सकें, साथ ही संवाद या चर्चा के द्वारा अपने सहपाठियों का दृष्टिकोण भी समझ पाएँ।

हमें यह विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक शृंखला छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक शृंखला को और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए सभी शिक्षार्थी, पाठकगण एवं शिक्षकगण के महत्वपूर्ण सुझाव अपेक्षीय हैं।

–प्रकाशक

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
⊙	मित्रता की सीख (चित्रकथा)	5
1.	उठो धरा के वीर सपूतों (कविता)	9
2.	पुस्तकालय (लेख)	17
3.	तीर्थयात्रा (कहानी)	23
4.	शल्य-चिकित्सा के जनक: सुश्रुत (कहानी)	35
5.	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (साक्षात्कार)	44
6.	भीष्म (कहानी)	53
7.	कृतयुगी विनोबा (जीवनी)	60
8.	भिक्षुक (कविता)	67
9.	मास्टर जी (एकांकी)	74
10.	बाघा जतिन (जीवनी)	81
11.	भारत की सांस्कृतिक एकता (निबंध)	90
12.	हिंद महासागर का मोती 'मॉरीशस' (यात्रा-वृतांत)	99
*	स्वमूल्यांकन पत्र-1	109
*	स्वमूल्यांकन पत्र-2	111

मित्रता की सीख

(चित्रकथा)

विजयनगर और पड़ोसी राज्य अनंगपुरम के बीच संबंध कुछ समय से खराब चल रहे थे। अनंगपुरम के कुछ जासूस विजयनगर आकर तोड़-फोड़ मचाते, उपद्रव करते। प्रजा परेशान थी। राजा ने मंत्री से इसे रोकने के लिए कहा। मंत्री ने सीमा पर जाकर निरीक्षण किया।

अगले दिन आकर बोला-

महाराज ! सीमा पर ऊँची दीवारें खड़ी कर दी जाएँ। तभी यह समस्या हल हो सकती है।

बाकी दरबारियों ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलाई।

तेनालीराम चुप था। राजा के पूछने पर बोला-

महाराज ! मंत्री और दूसरे दरबारियों ने जो कुछ कहा, वह समस्या का आधा हल है। आप इजाजत दें, तो मैं पूरा हल बता सकता हूँ।

राजा ने चौंककर कहा–
अच्छा बताओ, तुम्हारी क्या राय है?
महाराज ! मेरा तो यह विचार है कि दीवार बनाने की नहीं बल्कि हटाने की जरूरत है। लोग इधर से उधर आएँगे–जाएँगे, तो शत्रुता हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।

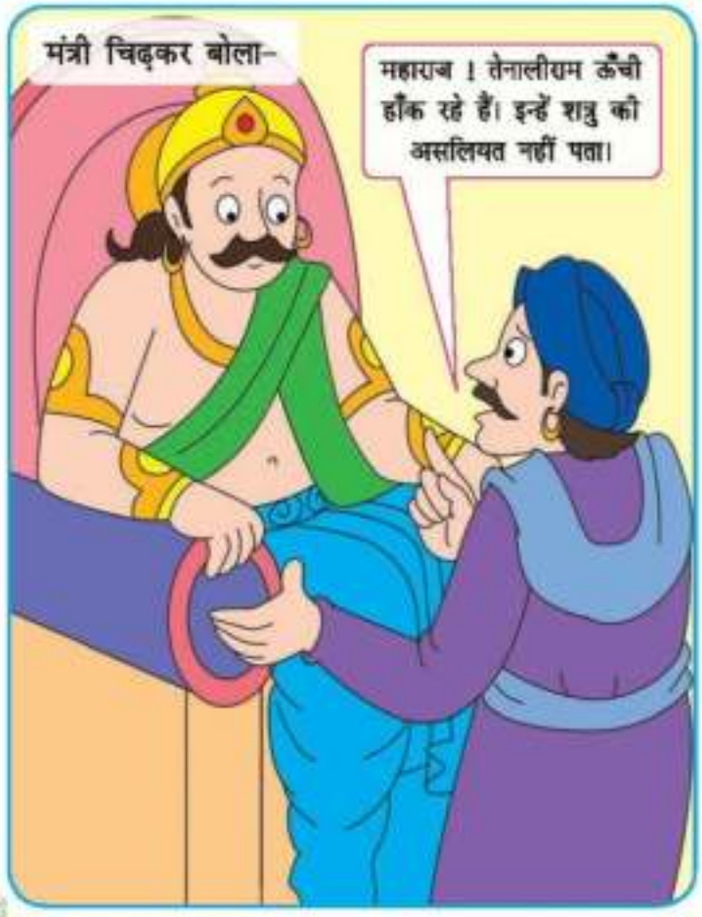
मंत्री चिढ़कर बोला–
महाराज ! तेनालीराम ऊँची हाँक रहे हैं। इन्हें शत्रु की असलियत नहीं पता।

राजा ने कुछ सोचा, फिर तेनालीराम से कहा–
तुम सीमा-रेखा पर सुरक्षा का इंतजाम देखो। शत्रु के जासूस इधर न आएँ, यह जिम्मा तुम्हारा है।

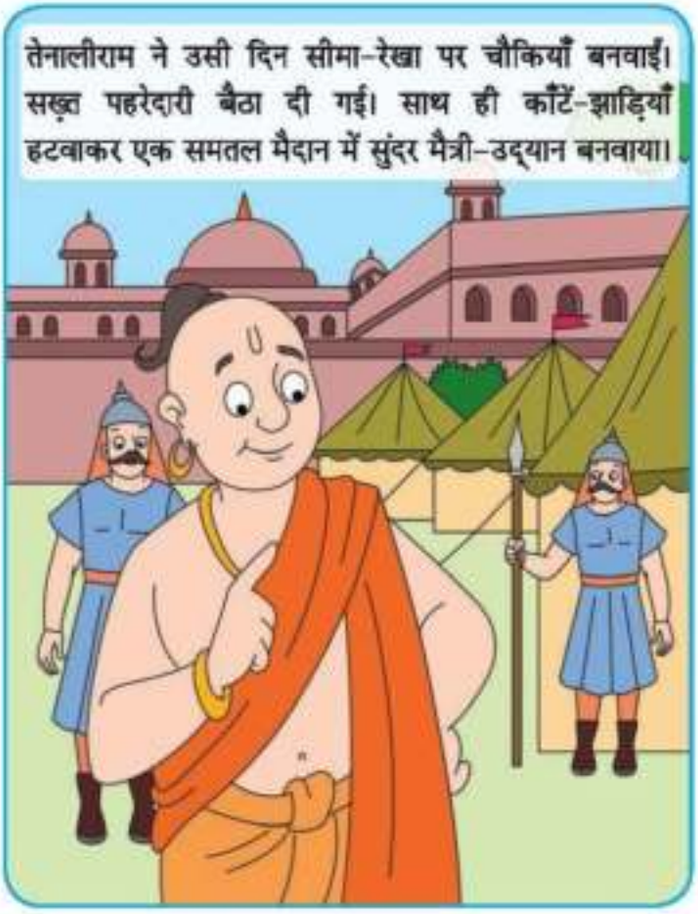
तेनालीराम ने उसी दिन सीमा-रेखा पर चौकियाँ बनवाईं। सख़्त पहरेदारी बैठा दी गई। साथ ही काँटें-झाड़ियाँ हटवाकर एक समतल मैदान में सुंदर मैत्री-उद्यान बनवाया।

फिर पड़ोसी राजा को संदेश भिजवाया गया–
आपके यहाँ से गायक, संगीतकार और कलाकार इस मैत्री उद्यान में आएँ, तो हमें खुशी होगी।

अगले पंद्रह दिनों में अनगिनत कवि, लेखक, कलाकार आए। बड़ा अनोखा मेला जुड़ा, जिसमें मिलकर गायकों ने दोनों देशों के लोकगीत गाए, नृत्य और अन्य कार्यक्रम हुए और सभी ने दोस्ती की कसमें खाईं।
वाह! क्या बात है।
वाह!
वाह!

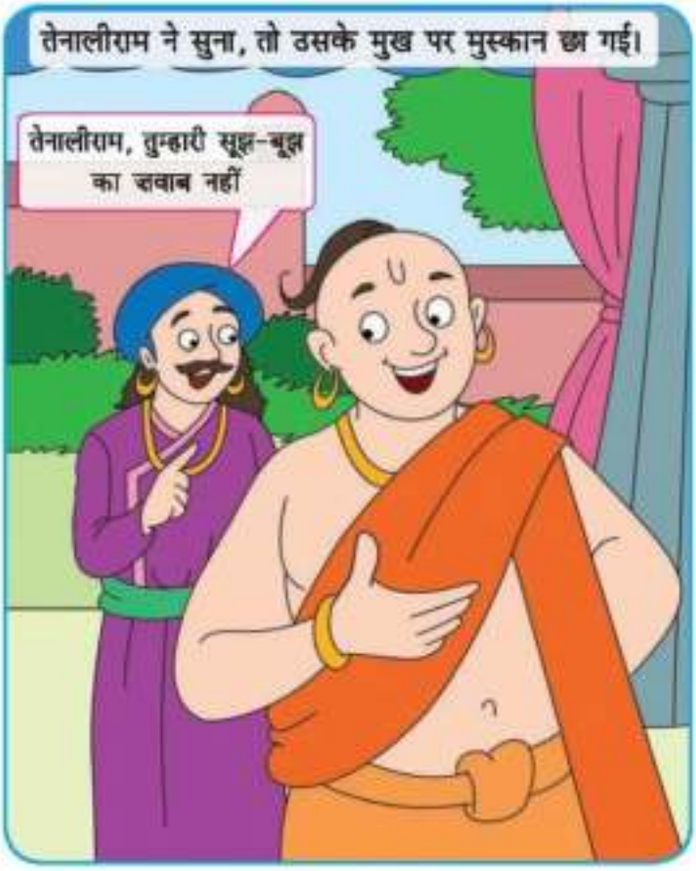

शिक्षाः मैत्रीपूर्ण व्यवहार से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

अध्याय 1

उठो धरा के वीर सपूतों
(कविता)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

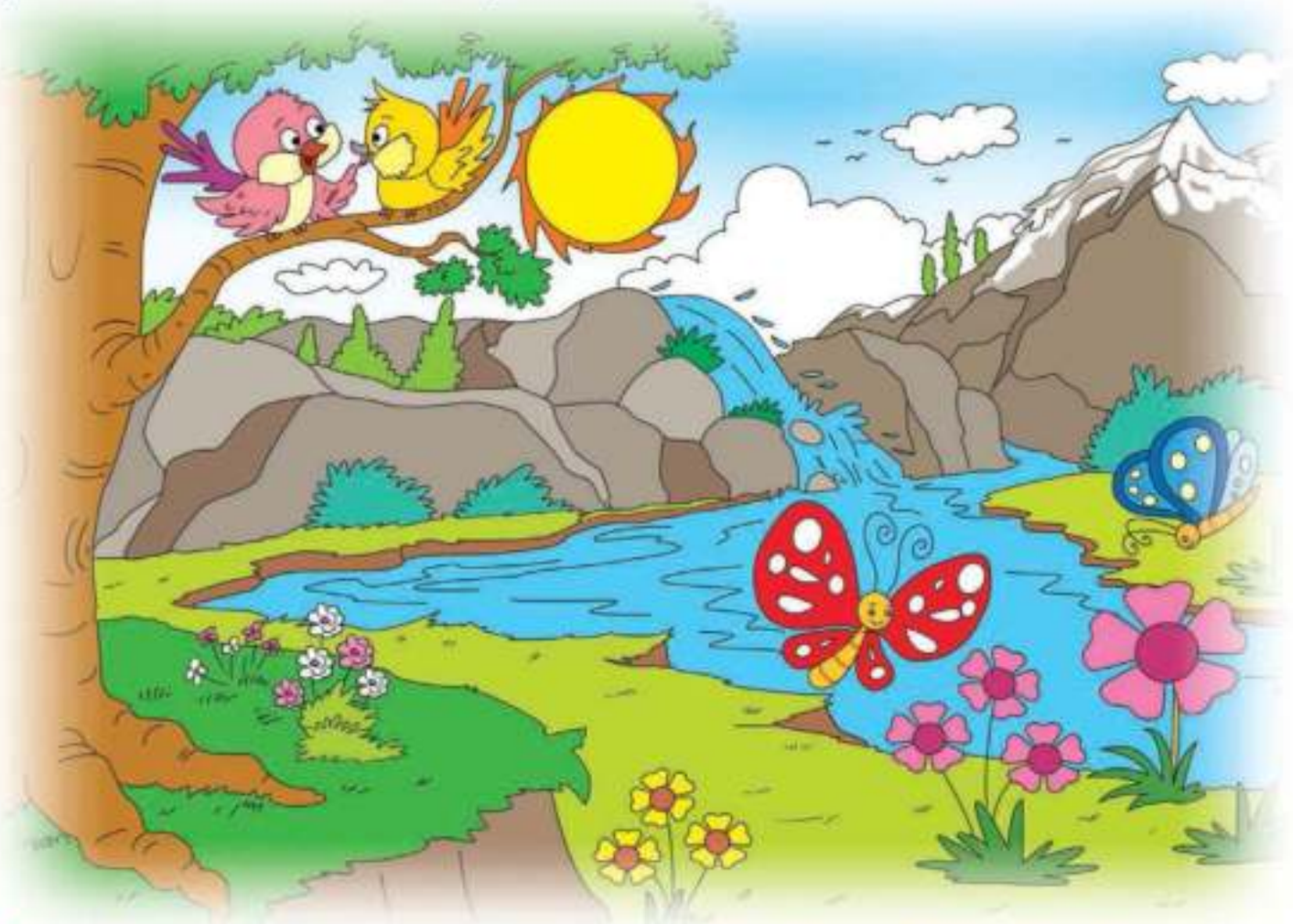

- प्रकृति द्वारा हमें किस प्रकार नव चेतना का संदेश प्रतिदिन दिया जाता है? कक्षा में बच्चों से इस विषय पर टिप्पणी अध्ययन पूर्व करवाएँ।

कविता परिचय (Poem Preview)

स्वयं में नई चेतना व जागृति भर कर नवयुग में नवराष्ट्र का निर्माण करना।

कठिन शब्द (Difficult Words)

धरा	सपूतों	पुनः	अवलोकन	मुझे	सुमनों

उठो, धरा के अमर सपूतों!
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से,
नव-स्फूर्ति, नव प्राण भरो।

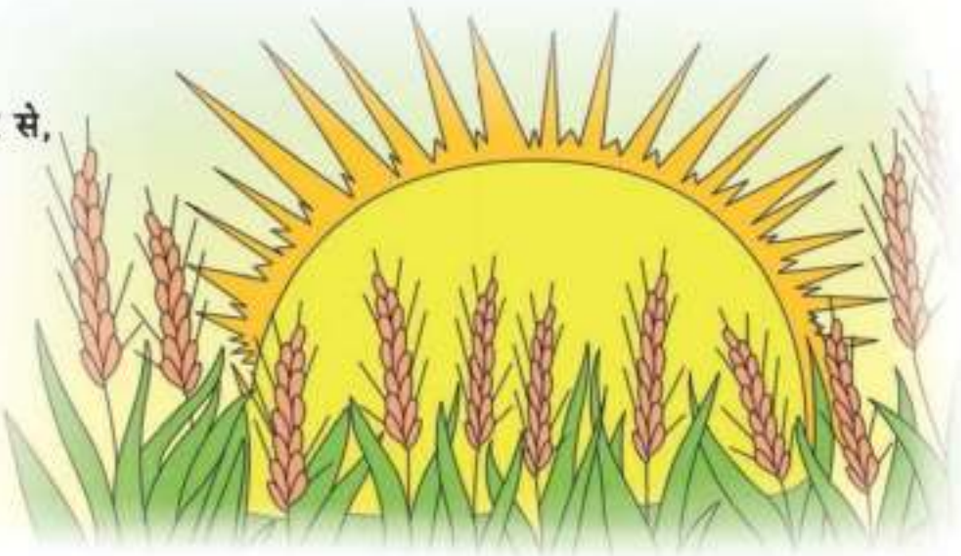

नया प्रातः है, नई बात है,
नई किरण है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगें,
नई आस है, साँस नई।

युग-युग के मुरझे सुमनों में
नई-नई मुस्कान भरो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ,
नए स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे,
मस्त उधर मँडराते हैं।

नवयुग की नूतन वीणा में,
नया राग, नव गान भरो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

कली-कली खिल रही इधर,
वह फूल-फूल मुस्काया है।
धरती माँ की आज हो रही,
नई सुनहरी काया है।

नूतन मंगलमय ध्वनियों से,
गुंजित जग-उद्यान करो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।
सरस्वती का पावन मंदिर,
शुभ संपत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका
रक्षक और पुजारी है,
शत्-शत् दीपक जला ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो।
उठो, धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

–द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

कविता का सारांश (Summary of the Poem)

The poem calls upon the immortal sons of the earth to rise and rebuild with new energy. It speaks of a new dawn filled with hopes and vitality. It encourages creating a new era with zeal. The poet envisions a world where nature sings new songs, and every child protects knowledge, represented by Saraswati. The poem ends with a call to light countless lamps of knowledge and herald a new age.

शब्दार्थ (Word Meaning)

आह्वान	= आमंत्रित करना (To invite)	नूतन	= नया (New)
निर्माण	= रचना (Creation)	स्फूर्ति	= उमंग (Enthusiasm)
अमर	= जो कभी न मरे (Immortal)	नवयुग	= नया युग (New era)

उच्चारण करें (Pronounce)

मंगलमय	ध्वनियों	उमंग	विहग	गुंजित
संपत्ति	पुनः			

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

शिक्षक/शिक्षिका कविता के माध्यम से चेतना एवं जागृति के संबंध में विस्तारपूर्वक चर्चा करें।
Teachers should discuss in detail the relationship between consciousness and awakening through the poem.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answer the given questions.)

(क) प्रस्तुत कविता में पक्षी क्या कर रहे हैं?

(ख) कवि ने किसे संबोधित किया है?

(ग) नवयुग की नूतन वीणा में कवि क्या भरने को कह रहे हैं?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Write the answers to the given questions.)

(क) धरती माता की काया कैसी हो रही है?

.....

(ख) कवि संसार-रूपी बगीचे को किस प्रकार गुंजित करने को कह रहे हैं?

.....

(ग) कवि धरती के वीर सपूतों को उठने के लिए क्यों कह रहे हैं?

.....

(घ) कविता का केंद्रीय भाव क्या है?

.....

3. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark the correct option with a (✓).)

(क) कवि ने नई-नई मुस्कान भरने के लिए कहा है-

☐ मुरझाए फूलों से ☐ भौंरों से ☐ पक्षी से ☐ सभी से

(ख) प्रस्तुत कविता के रचयिता कौन हैं?

☐ भगवती प्रसाद वाजपेयी ☐ रामधारी सिंह दिनकर

☐ निराला ☐ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

(ग) कवि ने नया राग और नवगान किसमें भरने को कहा है?

☐ नूतन वीणा में ☐ गहरे सागर में

☐ छोटी टोकरी में ☐ बाँसुरी में

4. सही मिलान कीजिए। (Match the correct pairs.)

(क) अमर	(i) मुस्कान
(ख) सुमन	(ii) स्वर
(ग) विहग	(iii) राग
(घ) वीणा	(iv) सपूतों

5. दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (Fill in the blanks with the given words.)

स्फूर्ति नवयुग धरती स्वर

(क) डाल पर बैठे पक्षी नए ..... में गाते हैं।

(ख) जन जीवन में नई ..... और प्राण भरो।

(ग) ..... माँ की काया सुनहरी हो रही है।

(घ) ज्ञानदीप जलाकर ..... का आह्वान करो।

6. कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए। (Complete the incomplete lines of the poem.)

(क) युग-युग के .....

.....

.....

..... निर्माण करो।

(ख) सरस्वती .....

.....

.....

..... पुजारी है।

7. दिए गए शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए। (Use the given words in sentences.)

(क) संपत्ति – .....

(ख) आह्वान – .....

(ग) भौंरे – .....

(घ) ज्योति – .....

(ङ) स्फूर्ति – .....

(च) नूतन – .....

(छ) उमंग – .....

(ज) प्रकाश – .....

जरा सोचिए (Critical Thinking)

8. संपूर्ण भारत में ज्ञान की देवी 'माँ सरस्वती' के जन्म दिवस को बसंत पंचमी के उत्सव रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक जन माँ सरस्वती की आराधना कर क्या आशीर्वाद माँगना चाहेंगे? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।
(Across India, the birth anniversary of the goddess of knowledge, 'Maa Saraswati,' is celebrated as the festival of Basant Panchami. What blessing would you ask for by worshipping Maa Saraswati? Express in your own words.)

9. क्या धर्म एवं जाति के आधार पर देश में नव निर्माण संभव है? कक्षा में चर्चा कर अपनी सहमति/असहमति को कारण सहित प्रस्तुत कीजिए।
(Is it possible for the country to be rebuilt based on religion and caste? Discuss in class and present your agreement/disagreement with reasons.)

ज़रा भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

10. दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए। (Write the Sanskrit forms of the given words.)

(क) नूतन – ..... (ख) भगत – .....

(ग) आस – ..... (घ) उमंग – .....

(ङ) सपूत – .....

11. अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कर पुनः लिखिए। (Correct the incorrect words and rewrite them.)

(क) ग्यान – ..... (ख) उधयान – .....

(ग) सर्फुती – ..... (घ) निमान – .....

12. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।
(Do the Sandhi-Vichhed (compound word separation) of the given words.)

(क) निस्संकोच – .....

(ख) दुःशासन – .....

(ग) निष्फल – .....

(घ) पुनर्जन्म – .....

13. दिए गए अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बनाइए।
(Create a single word for the given multiple words.)

(क) जो नया हो – .....

(ख) जो देखने योग्य हो – .....

(ग) शक्ति के अनुसार – .....

(घ) जो देखा न जा सके – .....

14. दिए गए शब्दों में लगे कारक चिह्नों के आधार पर वचन बदलें।
(Change the number based on the case markers in the given words.)

(क) फूल को – .....

(ख) देव से – .....

(ग) उमंग पर – .....

(घ) धरा के – .....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

15. प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
(Write the central theme of the given poem in your own words.)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

16. प्रस्तुत कविता के कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी के विषय में जानकारी एकत्रित कर दस पंक्तियाँ लिखिए।
(Collect information about the poet Dwarika Prasad Maheshwari and write ten lines about him.)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अध्याय 2

पुस्तकालय
(लेख)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

- शिक्षक/शिक्षिका उपरोक्त चित्र के आधार पर बच्चों से यह टिप्पणी करवाएँ कि एक अच्छा पुस्तकालय कैसा होना चाहिए?

लेख परिचय (Article Preview)

पुस्तकों के माध्यम से हमें ज्ञान में वृद्धि करते रहना चाहिए।

कठिन शब्द (Difficult Words)

पुस्तकालयाध्यक्ष ज्ञानवर्द्धन संस्थागत स्वामित्व क्षति संस्कृति

पुस्तकालय को पुस्तकों का घर कहते हैं। प्रायः प्रत्येक विद्यालय या छात्रावास में एक पुस्तकालय होता है। यह वह स्थान होता है, जहाँ पर विषय के अनुरूप पुस्तकों का चयन और संग्रह किया जाता है। पुस्तकालय की पुस्तकों को करीने से रैक में सुरक्षित रखा जाता है। उन सारी पुस्तकों की विषय के अनुसार ही सूचियाँ बनाई जाती हैं और उन्हें किसी रजिस्टर में दर्ज किया जाता है। उस रजिस्टर से ही पता चलता है कि कौन-सी पुस्तक किस रैक में किस नंबर पर रखी है।

पुस्तकों के लेन-देन और पुस्तकालय की देखभाल के लिए एक या दो व्यक्ति नियुक्त किए जाते हैं, जिन्हें पुस्तकालयाध्यक्ष या लाइब्रेरियन कहा जाता है। उनकी सहायता के लिए एक-दो कर्मचारी भी नियुक्त किए जाते हैं, जो पुस्तकें निकालकर देने में सहायता करते हैं और पुस्तक को वापस सही स्थान पर रखते हैं। पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। पुस्तकों से हमारा ज्ञानवर्द्धन होता है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों; यथा- कला, विज्ञान, सामाजिक, धार्मिक, राजनीति, आर्थिक, इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, आयुर्वेद और कथा कहानियों आदि की पुस्तकें संग्रहित की जाती हैं।

पुस्तकालयों को तीन प्रकार से बताया गया है, प्रथम प्रकार के निजी पुस्तकालय होते हैं। जिसमें कोई भी व्यक्ति जिसकी रुचि होती है उसी अनुसार पुस्तकों का संग्रह करता है। द्वितीय प्रकार के पुस्तकालय सार्वजनिक होते हैं जिसमें समाज के संपूर्ण वर्ग के लिए पुस्तकों का संग्रहण किया जाता है। तृतीय प्रकार का पुस्तकालय संस्थागत या वर्ग विशेष के लिए होता है।

'निजी पुस्तकालय' व्यक्ति की निजी संपत्ति होती है, जबकि 'सार्वजनिक पुस्तकालय' पर जनता या सरकार का स्वामित्व होता है। निजी पुस्तकालय के स्वामी का यह अधिकार होता है कि वह अपनी पुस्तकें किसी को दे या न दे। जबकि सार्वजनिक पुस्तकालय में से कोई भी व्यक्ति पुस्तकालय के नियमों के अनुसार पुस्तकालय का सदस्य बनकर, पुस्तकें प्राप्त कर सकता है और उसका उपयोग करके उसे वापस कर सकता है।

स्कूलों में स्थापित पुस्तकालय यद्यपि स्कूल की निजी संपत्ति होते हैं, किंतु सभी छात्र-छात्राएँ और आस-पास रहने वाले व्यक्ति भी, उस पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं। ऐसे पुस्तकालयों को 'संस्थागत पुस्तकालय' भी कहा जा सकता है। ये उनकी निजी संपत्ति होते हैं। विभिन्न संस्थाएँ भी पुस्तकालय स्थापित करती हैं।

द्वितीय श्रेणी के पुस्तकालय जो सार्वजनिक होते हैं, वहाँ सामान्यतः आम जन-जीवन से जुड़ी पत्र-पत्रिकाओं को भी मँगाया जाता है। जिनका अध्ययन पुस्तकालय में बैठकर शांति के साथ किया जाता है। इस प्रकार के पुस्तकालय में बिना रोक-टोक या भेद-भाव के कोई भी आ-जा सकता है। हालाँकि उन लोगों को वहाँ की मर्यादा का ख़्याल रखना पड़ता है।

पुस्तकालयों से सबसे बड़ा लाभ यह है कि वे व्यक्ति या वे छात्र, जो महँगी पुस्तकें नहीं खरीद सकते या संग्रह करने में असमर्थ हैं, पुस्तकालयों से पुस्तकें लेकर अपनी पढ़ाई कर सकते हैं।

केवल इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी होता है कि पुस्तकों को किसी प्रकार की क्षति न पहुँचाई जाए। उस पर कुछ लिखें नहीं, उसके किसी पृष्ठ या तस्वीर को फाड़े नहीं और उसे छुपाकर चोरी से घर न ले जाएँ। पुस्तकें सार्वजनिक संपत्ति होती हैं। उनकी सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। इन पुस्तकालयों के माध्यम से हम अपने देश की ही नहीं, अपितु देश-विदेश की संस्कृति को सुरक्षित रखते हैं। ये पुस्तकालय ज्ञान का संचित कोष अपने भीतर समेटे रहते हैं। ये राष्ट्र की धरोहर होते हैं। और राष्ट्र की इस धरोहर का उपयोग करने तथा इसे सुरक्षित रखने का सभी को अधिकार है।

लेख का सारांश (Summary of the Article)

A library collects, organizes, and maintains books on various subjects. Found in schools and hostels, books are arranged on racks and listed in registers. Librarians manage the lending and care of these books. They provide access to knowledge, especially for those who can't afford books. Protecting libraries is vital as they preserve cultural heritage and are valuable resources for everyone.

शब्दार्थ (Word Meaning)

छात्रावास	=	ऐसी इमारत जिसमें विद्यार्थी रहते हैं। (Hostel, a building where students live)
कर्मचारी	=	वेतन पर काम करने वाला (Employee, a person working for wages)
संपत्ति	=	धन-दौलत (Property, wealth)
संग्रहण	=	एकत्रित, इकट्ठा (Collection, gathering)
मर्यादा	=	सीमा (Limit, boundary)
सार्वजनिक	=	सबके लिए उपयुक्त (Public, suitable for all)
धरोहर	=	अमानत (Heritage, legacy)
कर्तव्य	=	करने योग्य कार्य (Duty, obligation)

उच्चारण करें (Pronounce)

संग्रह	ज्ञानवर्द्धक	आयुर्वेद	संग्रहित	सार्वजनिक
राष्ट्र	अध्ययन	संस्थागत		

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

पुस्तकालय सामाजिक तथा मानसिक क्रियाओं की अभिवृद्धि का स्थान होता है, पुस्तकालय जाने के लिए छात्रों को प्रेरित करें।

The library is a place for the growth of social and mental activities. Encourage students to visit the library.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answers to the given questions.)**

(क) पुस्तकालय को कितने प्रकार में वर्गीकृत किया गया है?

(ख) मानव का पुस्तकों से क्या संबंध है?

(ग) सार्वजनिक पुस्तकालय किसकी संपत्ति है?

(घ) पुस्तकों के संग्रहण के स्थान को क्या कहते हैं?

(ङ) पुस्तकालय की देख-रेख कौन करता है?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Answers to the given questions.)**

(क) पुस्तकों का संग्रहण पुस्तकालय में किस प्रकार से होता है?

.....

(ख) पुस्तकालयों के द्वारा हमें किस प्रकार के लाभ होते हैं? लिखिए।

.....

(ग) तृतीय श्रेणी तथा द्वितीय श्रेणी के पुस्तकालयों में कोई दो अंतर लिखिए।

.....

(घ) निजी पुस्तकालय से आपका क्या तात्पर्य है? लिखिए।

.....

3. **उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark the correct option with a tick (✓).)**

(क) पुस्तकालय का शाब्दिक अर्थ क्या होता है?

- ☐ पुस्तकों का घर
- ☐ पुस्तक रखने का स्थान
- ☐ पुस्तक बिक्री का स्थान
- ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) सार्वजनिक पुस्तकालय पर किसका स्वामित्व होता है?

- ☐ व्यक्ति विशेष का
- ☐ सरकार और जनता का
- ☐ पुस्तकालय अध्यापक का
- ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) पुस्तकों का संग्रहण कहाँ होता है?

☐ घर में ☐ पुस्तकालय में ☐ अलमारी में ☐ देवालय में

(घ) पुस्तकालय में किसको संरक्षित करके रखा जाता है?

☐ धन को ☐ ज्ञान को ☐ पैसे को ☐ पूँजी को

4. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (Fill in the blanks in the given sentences.)

(क) प्रायः प्रत्येक विद्यालय या छात्रावास में एक ..... होता है।

(ख) पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी ..... होती हैं।

(ग) पुस्तकालय ..... प्रकार के होते हैं।

(घ) सार्वजनिक पुस्तकालयों में बिना ..... के कोई भी व्यक्ति जा सकता है।

(ङ) पुस्तकें सार्वजनिक ..... होती हैं।

5. अध्याय में प्रयुक्त शब्दों के प्रयोग से वाक्य निर्मित कीजिए।
(Make sentences using the words used in the chapter.)

(क) ज्ञान-वर्द्धक – .....

(ख) शांति – .....

(ग) संपत्ति – .....

(घ) पुस्तकालय – .....

(ङ) ज्ञान – .....

जरा सोचिए (Critical Thinking)

6. संस्थागत पुस्तकालय निजी भी होते हैं और सार्वजनिक भी ऐसा क्यों? सोच-समझकर बताइए। पुस्तकें व्यक्ति की सच्ची मित्र होती हैं? कैसे?
(Why are institutional libraries both private and public? Think and explain. How are books a person's true friend?)

जरा भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

7. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। (Write the antonyms of the given words.)

(क) संग्रह – .....

(ख) मित्र – .....

(ग) रुचि – .....

(घ) सार्वजनिक – .....

(ङ) नियुक्त – .....

(च) महँगी – .....

(छ) संचित – .....

(ज) समर्थ – .....

8. दिए गए वाक्यों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए।
(Use the appropriate punctuation marks in the given sentences.)

(क) तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा – .....

(ख) वह कितना सुंदर दृश्य है – .....

(ग) स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकता है – .....

(घ) मानव शरीर में रक्त कणों का क्या काम है – .....

(ङ) बीजक कबीरदास द्वारा रचित ग्रंथ है – .....

9. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।
(Write three synonyms for each of the given words.)

(क) कर्मचारी – ....

(ख) नितांत – ....

(ग) संस्था – ....

(घ) संस्कृति – ....

(ङ) कोप – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

10. पुस्तकालय राष्ट्र की धरोहर होते हैं? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
(Are libraries a nation's heritage? Discuss this topic in class.)

11. आपके स्कूल के पुस्तकालय में किन कवियों की रचनाओं का संग्रह है? सूची बनाकर कक्षा में चर्चा कीजिए।
(Which poets' works are collected in your school library? Make a list and discuss it in class.)

ज़रा दिमाग लगाइए (Brain Storming Activity)

12. दिए गए पुस्तकालयों को पहचान करके बताइए कि ये सभी कहाँ स्थित हैं?
(Identify the given libraries and tell where they are located.)

स्टेट लाइब्रेरी ऑफ विक्टोरिया – .....

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस – .....

रॉयल डैनिश लाइब्रेरी – .....

रशियन स्टेट लाइब्रेरी – .....

ट्रिनिटी कॉलेज लाइब्रेरी – .....

अध्याय
3

तीर्थयात्रा
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

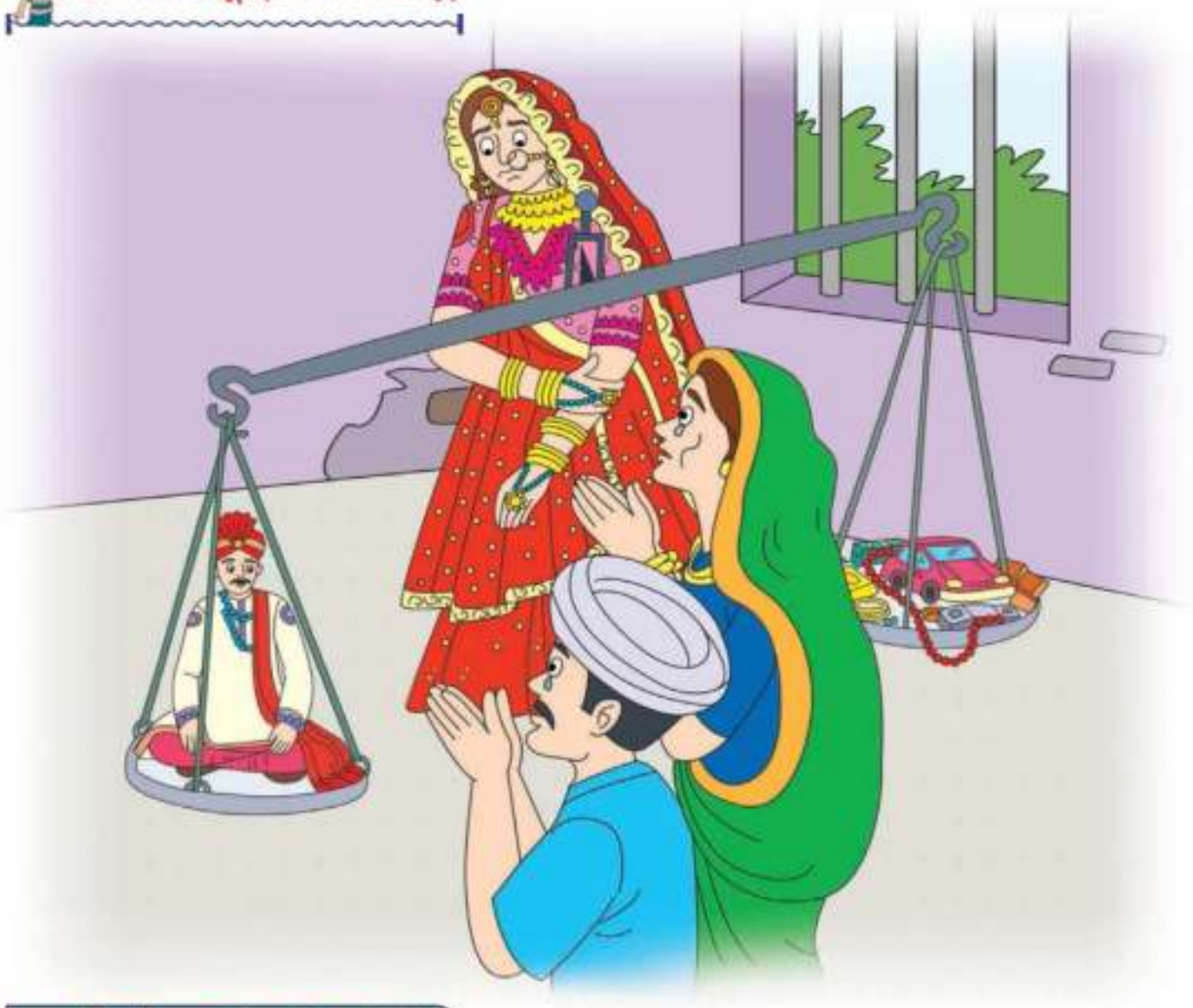

कहानी परिचय (Story Preview)

अपने सुख का त्याग कर दूसरे के दुख को सुख में परिवर्तित करना ही जीवन का सच्चा सुख है।

कठिन शब्द (Difficult Words)

कृतज्ञता	साधारण	भर्राए	व्याकुल	सख्त	भयानक

हेमराज लाजवंती का एकमात्र सहारा था। उसका मुँह देखकर वह अपने सारे दु:ख भूल जाती थी। इससे पहले उसके कई पुत्र पैदा हुए, मगर सब-के-सब बचपन में ही मर गए। यद्यपि हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था, मगर लाजवंती की आँखों में वैसा बालक सारे संसार में न था। माँ की ममता ने उसकी आँखों को धोखे में डाल दिया था। लाजवंती को उसकी इतनी चिंता थी कि दिन-रात उसे छाती से लगाए रहती थी। मानो वह दीपक हो, जिसे बुझाने के लिए हवा के तेज़ झोंके बार-बार आक्रमण कर रहे हों। वह उसे छिपा-छिपाकर रखती थी कि कहीं उसे किसी की नज़र न लग जाए। गाँव के लड़के प्राय: खेतों में खेलते-फिरते थे, मगर लाजवंती हेमराज को घर से बाहर न निकलने देती थी और अगर कभी वह निकल भी जाता, तो घबराकर उसे ढूँढ़ने लग जाती थी।

गाँव की स्त्रियाँ कहतीं, "हमारे भी तो बच्चे हैं। तू ज़रा-ज़रा सी बात में यों पागल क्यों हो जाती है?" लाजवंती यह सुनती, तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगते। भर्राए हुए स्वर में उत्तर देती, "क्या कहूँ? मेरा जी डर जाता है!"

मगर इतना सावधान रहने पर भी हेमराज बुरी नज़र से न बच सका। प्रात:काल था, लाजवंती दूध दुह रही थी। इतने में हेमराज जागा और जागते ही मुँह फुलाकर बोला, "माँ!"

आवाज़ में उदासी थी, लाजवंती के हाथ से बरतन गिर गया। दौड़ती हुई हेमराज के पास पहुँची और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली, "क्यों हेम! क्या है बेटा? इतना घबराया हुआ क्यों है तू? इस तरह क्यों बोलता है।"

हेमराज की आँखों में आँसू डबडबा आए, रुक-रुककर बोला, "सिर में दर्द हो रहा है, बहुत तेज़ दर्द है।"

बात साधारण थी, मगर लाजवंती का नारी-हृदय काँप गया। यही दिन थे, यही ऋतु थी, जब उसका पहला पुत्र मदन मरा था। वह भी इसी तरह बीमार हुआ था।

लाजवंती को अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती-सी मालूम होने लगी। जिस तरह विद्यार्थी एक बार फ़ेल होकर दूसरी बार परीक्षा में बैठते समय घबराता है, उसी प्रकार हेमराज के सिरदर्द से लाजवंती व्याकुल हो गई।

गाँव में दुर्गादास वैद्य अच्छे अनुभवी वैद्य थे। लोग उन्हें 'लुकमान' समझते थे। सैकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे। आस-पास के गाँवों में भी उनका बड़ा नाम था। लाजवंती को देखकर उन्होंने पात्र हाथ से रख दिया और आँखों से ऐनक उतारकर बोले, "क्यों बेटी! क्या बात है?"

लाजवंती ने चिंतित होकर उत्तर दिया, "हेम बीमार है।"

वैद्य जी ने सहानुभूति के साथ पूछा, "कब से?"

"आज ही से। कहता है, सिर में दर्द है।"

"बुखार तो नहीं है?"

"मालूम तो नहीं होता। आप चलकर देख लेते, तो अच्छा होता।"

वैद्य जी का मनोरथ सिद्ध हुआ। उन्होंने जल्दी से कपड़े बदले और लाजवंती के साथ चल दिए। जाकर देखा, तो हेमराज बुखार से बेसुध पड़ा था। वैद्य जी ने नाड़ी देखी, माथे पर हाथ रखा और फिर कहा, "चिंता

की कोई बात नहीं। दवा देता हूँ, बुखार उतर जाएगा।"

लाजवंती के डूबे हुए हृदय को सहारा मिल गया। उसने दुपट्टे के आँचल से अठन्नी निकाली और वैद्य जी को भेंटकर दी। वैद्य जी ने मुँह से 'नहीं-नहीं' कहा, मगर हाथों ने मुँह का साथ न दिया। उन्होंने पैसे ले लिए।

कई दिन बीत गए, हेमराज का बुखार नहीं उतरा। वैद्य जी ने कई दवाईयाँ बदली, परंतु किसी ने अपना असर न दिखाया। लाजवंती की चिंता बढ़ने लगी। वह रात-रात भर उसके सिरहाने बैठी रहती थी। लोग आते और धीरज दे-देकर चले जाते थे, परंतु लाजवंती का मन उनकी बातों की ओर न दौड़ता था। वह डरी-डरी रहती और अपने मन की पूरी शक्ति से हेम की सेवा में लगी रहती थी।

एक दिन उसने वैद्य से पूछा, "हकीम जी! आख़िर क्या बात है, जो यह बुखार उतरने का नाम नहीं लेता?"

वैद्य जी ने उत्तर दिया, "मियादी बुखार है।"

लाजवंती चौंक पड़ी। उसने तड़पकर पूछा, "मियादी बुखार क्या?"

"अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।"

"पर कब तक उतरेगा?"

"इक्कीसवें दिन उतरेगा, इससे पहले नहीं उतर सकता।"

"आज ग्यारह दिन तो हो गए हैं।"

"बस दस दिन और हैं। किसी तरह ये दिन निकाल दो, भगवान भला करेगा।"

लाजवंती का माथा ठनका। हिचकिचाते हुए बोली, "कोई अंदेशा तो नहीं? सच-सच बता दीजिए।"

वैद्य जी थोड़ी देर चुप रहे। इस समय वे सोच रहे थे कि उसे सच-सच बताएँ या न बताएँ? अंत में बोले, "देखो! बुखार सख़्त है, हानिकारक भी हो सकता है। मेरी राय में तो हेम के पिता को बुलवा लो तुम।"

लाजवंती सहम गई। रेत के स्थलों को मीठे जल की नदी समझ कर जब हिरण पास पहुँचकर देखता है कि नदी अभी तक उतनी ही दूर है, तो जो दशा उसके मन की होती है, वही दशा इस समय लाजवंती की हुई। उसे आशा नहीं, निश्चय हो गया था कि हेम एक-आध दिन में ठीक हो जाएगा। फिर उसी तरह खेलता

फिरेगा, फिर उसी तरह नाचता फिरेगा। माँ देखेगी, खुश होगी। लोग बधाइयाँ देंगे। मगर वैद्य की बात सुनकर उसका दिल बैठ गया। आशा के साथ निराशा भी सामने आकर खड़ी हो गई।

उसका पति रामलाल मुल्तान में नौकर था। उसने उसे तार भेजा, वह तीसरे दिन पहुँच गया। इलाज दुगनी सावधानी से होने लगा। यहाँ तक कि दस दिन और भी बीत गए। अब इक्कीसवाँ दिन सिर पर था। हेम की देह अभी तक आग की तरह तप रही थी। लाजवंती और रामलाल दोनों घबरा गए। सोचने लगे, "क्या बुखार एकाएक उतरेगा?"

वैद्य ने आकर नाड़ी देखी, तो घबराकर बोले, "आज की रात बड़ी भयानक है। सावधान रहना, बुखार एकाएक उतरेगा।"

लाजवंती और रामलाल दोनों के प्राण सूख गए। वैद्य के शब्द किसी आने वाले भय की पूर्व सूचना थे। रामलाल दवाएँ सँभालकर बेटे के सिरहाने बैठ गया परंतु लाजवंती के हृदय को चैन न था। उसने संध्या समय थाल में घी के दीपक जलाए और मंदिर की ओर चली। इस समय उसे आशा अपनी पूरी जीवन-शक्ति के साथ सामने नाच करती हुई दिखाई दी। लाजवंती मंदिर पहुँची और देवी के सामने देर तक रोती रही। जब थककर उसने सिर उठाया, तो उसका मुख-मंडल शांत था; जैसे– तूफ़ान शांत हो जाता है। उसे ऐसा लगा मानो कोई दिव्य शक्ति उसके कान में कह रही है– 'तूने आँसू बहाकर देवी के पाषाण हृदय को मोम कर लिया है।' लाजवंती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की और प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर से मनौती मानी, "देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थ-यात्रा करूँगी!"

यह मनौती मानने के बाद लाजवंती को ऐसा जान पड़ा, जैसे उसके दिल पर से किसी ने कोई बोझ हटा दिया है, जैसे उसका संकट टल गया है। वह निश्चिंत हो गई कि अब उसके हेम को कोई भय नहीं है। लौटी, तो उसके पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे। उसके हृदय-सागर में आनंद की तरंगें उठ रही थीं। वह दौड़ती हुई घर पहुँची तो पति ने कहा, "लो बधाई हो! तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया। बुखार धीरे-धीरे उतर रहा है।"

लाजवंती के मुख पर प्रसन्नता थी और आँखों में आशा की झलक। झूमती हुई बोली, "अब हेम को कोई डर नहीं है। मैं तीर्थ-यात्रा की मनौती मान आई हूँ।"

रामलाल ने तीर्थ-यात्रा के खर्च का अनुमान किया, तो हृदय बैठ गया परंतु पुत्र-स्नेह ने इस चिंता को देर तक न ठहरने दिया। उत्तर दिया, "अच्छा किया! रुपए का क्या है, हाथ का मैल है, आता है, चला जाता है। परमेश्वर ने एक लाल दिया है, वह जीता रहे। यही हमारी दौलत है।"

लाजवंती ने स्वामी को सुला दिया और आप रात भर जागती रही।

प्रभात हुई, तो हेम का बुखार बिल्कुल उतर गया था। लाजवंती के मुख-मंडल से प्रसन्नता टपक रही थी; जैसे– "संध्या के समय गौओं के स्तनों से दूध की बूँदें टपकने लगती हैं।"

वैद्य जी ने आकर देखा, तो उनका मुँह भी चमक उठा। अभिमान से सिर उठाकर बोले, "अब कोई चिंता नहीं। तुम्हारा बच्चा बच गया।"

लाजवंती ने हेम की कमज़ोर देह पर हाथ फेरते हुए कहा, "क्या से क्या हो गया!" वैद्य ने लाजवंती की ओर देखा और रामलाल से बोले, "यह सब इसी के परिश्रम का फल है।"

लाजवंती ने उत्तर दिया, "देवी माता की कृपा है।"

"मैं तुम्हें दूसरी सावित्री समझता हूँ। उसने मरे हुए पति को ज़िंदा किया था, तुमने पुत्र को मृत्यु के मुँह से निकाला है। तुम यदि दिन-रात एक न कर देती, तो हेम का बचना असंभव था। यह सब तुम्हारी मेहनत का फल है। बच्चा बचा नहीं, दूसरी बार पैदा हुआ है।"

रामलाल के होठों पर मुस्कुराहट थी, आँखों में चमक। उसके सातवें दिन वे अपनी नौकरी पर चले गए और कहते गए कि तीर्थ-यात्रा की तैयारी करो।

तीन महीने बीत गए। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए तैयार हुई। अब उसके मुख पर फिर वही आभा थी, आँखों में फिर वही चमक, दिल में फिर वही खुशी। हेम आँगन में इस तरह चहकता फिरता था जैसे- फूलों पर बुलबुल चहकती है। लाजवंती उसे देखती, तो फूली न समाती थी।

तीर्थ-यात्रा पर जाने से पहले की रात उसके आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हो रहा था। झाँझें और करतालें बज रही थीं। ढोलक की थाप गूँज रही थीं। स्त्रियाँ गाती थीं, बजाती थीं, शोर मचाती थीं। दूसरी तरफ़ कहीं पूड़ियाँ बन रही थीं, कहीं हलुवा। उनकी सुगंध से दिमाग तर हुए जाते थे। लाजवंती इधर-से-उधर दौड़ी फिरती थी, मानो उसके यहाँ ब्याह हो।

लोग खा-पीकर आराम करने लगे। जो बचा हुआ था, वह गरीबों में बाँट दिया गया। लाजवंती ने लोगों को विदा किया और चलने की तैयारी में लगी। उसने टीन के एक बक्से में ज़रूरी कपड़े रखे, एक बिस्तर तैयार किया, गले में लाल रंग की सूती माला पहनी, माथे पर चंदन का लेप किया। गऊ एक पड़ोसन को सौंपी और उससे बार-बार कहा, "इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना। मैं जा रही हूँ, मगर मेरा मन अपनी गऊ में रहेगा।"

सहसा किसी की सिसकी भरने की आवाज़ सुनाई दी। लाजवंती के कान खड़े हो गए। उसने चारों तरफ़ देखा, मगर कोई दिखाई न दिया। इस समय सारा गाँव सुख-स्वप्न में बेसुध पड़ा था। इस समय यह सिसकी भरने वाला कौन है? यह सोचकर लाजवंती हैरान रह गई। वह आँगन में निकल आई और ध्यान से सुनने लगी। सिसकी की आवाज़ फिर सुनाई दी।

लाजवंती छत पर चढ़ गई और पड़ोसन के आँगन में झुककर ज़ोर से बोली, "माँ, हरो!"

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। फिर एक चारपाई पर से उत्तर मिला, "कौन है? लाजवंती?" आवाज़ में आँसू मिले हुए थे।

लाजवंती जल्दी से नीचे उतर गई और हरो के पास पहुँचकर बोली, "माँ, क्या बात है? तू रो क्यों रही है?"

हरो सचमुच रो रही थी परंतु अपना रोना लाजवंती के सामने कहते हुए उसके नारी-दर्प को बट्टा लगता, इसलिए अपनी वास्तविक अवस्था को छिपाती हुई बोली, "कोई बात नहीं है।"

"तू रो क्यों रही है?"

हरो के रुके हुए आँसुओं का बाँध टूट गया।

लाजवंती ने फिर पूछा, "अरी! बात क्या है, जो तू इस समय रो रही है? मैं तेरी पड़ोसन हूँ, मुझसे मत छिपा।" हरो ने कुछ उत्तर न दिया। वह सोच रही थी कि इसे बताऊँ या न बताऊँ, प्रभात हो चला था, कुछ-कुछ प्रकाश निकल आया था। लाजवंती चलने के लिए आतुर हो रही थी। मगर हरो को क्या दुःख है, यह जाने

बिना चले जाना उसके लिए कठिन था। उसने तीसरी बार फिर पूछा, "माँ, बता दो ना, तुम्हें क्या दुःख है?"

हरो ने दुःखी होकर पूछा, "क्या तुम उसे दूर कर दोगी?"

"हो सका, तो ज़रूर कर दूँगी।"

"यह असंभव है।"

"संसार में असंभव कोई बात नहीं। भगवान सब कुछ कर सकता है।"

हरो थोड़ी देर तक चुप रही, फिर धीरे-से बोली, "कुँवारी-बेटी का दुःख खा रहा है। रात-रात भर रोती रहती हूँ। जाने, यह नाव कैसे पार लगेगी?"

"यह क्यों? उसके ब्याह का खर्च तो तुम्हारे जेठ ने देना मंज़ूर कर लिया है।"

"ऐसे भाग होते, तो रोना काहे का था? "

लाजवंती ने अकुलाकर पूछा, "तो क्या यह झूठ है?"

"बिल्कुल झूठ भी नहीं। उसने दो सौ रुपए के गहने-कपड़े बनवा दिए हैं, मगर मिठाई आदि का प्रबंध नहीं किया। अब चिंता यह है कि बारात आएगी तो उसके सामने क्या धरूँगी, बाराती मिठाई माँगेंगे, पूड़ियाँ माँगेंगे, हलवा माँगेंगे। यहाँ सत्तू खिलाने की भी हिम्मत नहीं। यह सोच-सोचकर सूखती जाती हूँ।"

लाजवंती ने कुछ सोचकर उत्तर दिया, "क्या गाँव के लोग एक गरीब कन्या का ब्याह नहीं कर सकते और यह उनकी दया न होगी, उनका धर्म होगा।"

हरो की आँखें भर आईं। वह इस समय गरीब थी, परंतु कभी उसने अच्छे दिन भी देखे थे। लाजवंती के प्रस्ताव से दुःख हुआ; जैसे– नया-नया भिखारी गालियाँ सुनकर ज़मीन में गड़ जाता है। उसने धीरे-से कहा, "बेटी! मुझसे भी तो यह अपमान न देखा जाएगा।"

"परंतु इस तरह तो गाँवभर की नाक कट जाएगी।" हरो ने बात काटकर कहा।

"मैं भी तो इसे सहन नहीं कर सकूँगी। किसी के सामने हाथ फैलाना भी तो बुरा है।"

"तो क्या करोगी? कन्या कुँवारी बैठाए रखोगी?"

"भगवान की यही इच्छा है, तो मेरा क्या बस है? उसे लेकर कहीं निकल जाऊँगी। न कोई देखेगा, न कोई बात करेगा।"

लाजवंती हरो की अवस्था देखकर काँप गई। उसे ऐसा लगा जैसे कोई कह रहा है कि

अगर यह हो गया, तो ईश्वर का कोप गाँवभर को जलाकर राख कर देगा। लाजवंती अपने-आपको भूल गई। उसका हृदय दु:ख से पानी-पानी हो गया! उसने जोश में कहा, "चिंता न करो, तुम्हारा संकट मैं दूर करूँगी। तेरी बेटी का ब्याह होगा और बारात के लोगों को भोजन मिलेगा। तेरी बेटी, तेरी ही बेटी नहीं, मेरी भी है।"

हरो ने वह सुना, जिसकी उसे इच्छा थी, परंतु आशा न थी। उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलकने लगे। लाजवंती तीर्थ-यात्रा के लिए अधीर हो रही थी। वह सोचती थी– हरिद्वार, मथुरा, वृंदावन के मंदिरों को देखकर हृदय कली की तरह खिल जाएगा। मगर जो आनंद उसे इस समय प्राप्त हुआ, वह उस कल्पित आनंद की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़-चढ़कर था। वह दौड़ती हुई अपने घर गई और संदूक से दो सौ रुपए लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए। यह रुपए जमा करते समय वह प्रसन्न हुई थी, पर इस समय वह उससे भी अधिक प्रसन्न हुई। जो सुख त्याग में है, वह ग्रहण में कहाँ?

–सुदर्शन

कहानी का सारांश (Summary of the Story)

Lajwanti, who adored her only son Hemraj, was horrified when he fell critically ill. Despite a healer's efforts, his condition worsened, leading her to vow a pilgrimage to the goddess. When Hemraj recovered, Lajwanti planned her journey but chose to give her saved funds to neighbor Haro for her daughter's wedding, believing true joy lies in helping others.

शब्दार्थ (Word Meaning)

पाषाण	=	पत्थर (Stone)
परिक्रमा	=	चक्कर लगाना (Circumambulation, going around)
अंदेशा	=	संदेह (Doubt)
व्याकुल	=	बेचैन (Anxious)
आक्रमण	=	हमला (Attack)
वास्तविक	=	सच्ची बात (Real)
संकट	=	दु:ख (Crisis)
कृतज्ञता	=	आभार प्रकट करना (Gratitude)

उच्चारण करें (Pronounce)

प्रसन्नता स्नेह परमेश्वर मुस्कुराहट तीर्थ-यात्रा
स्वप्न असंभव हिम्मत

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

शिक्षक/शिक्षिका कहानी के माध्यम से बच्चों को संवेदनशीलता और त्याग जैसी भावनाओं से परिचित करवाएँ।
Through the story, teachers should familiarize children with feelings of sensitivity and sacrifice.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answers to the given questions.)

(क) लाजवंती का किसके प्रति अधिक लगाव था?

(ख) लाजवंती ने तीर्थयात्रा का निश्चय क्यों किया?

(ग) हरो क्यों रो रही थी?

(घ) लोग वैद्य जी को 'लुकमान' क्यों समझते थे?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Write the answers to the given questions.)

(क) लाजवंती तीर्थयात्रा पर क्यों न जा सकी?

.....

(ख) लाजवंती की व्याकुलता का क्या कारण था?

.....

(ग) अपनी वास्तविक अवस्था को कौन छिपा रहा था और क्यों?

.....

(घ) लाजवंती ने हरो के दुःख को किस प्रकार ग्रहण किया?

.....

3. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark the correct option with a (✓).)

(क) लाजवंती ने वैद्य जी को भेंट की-

☐ चवन्नी ☐ इकन्नी ☐ अठन्नी ☐ दवन्नी

(ख) वैद्य जी ने मियादी बुखार की अवधि कितने दिन की बताई।

☐ पंद्रह दिन की ☐ इक्कीस दिन की ☐ दस दिन की ☐ एक सप्ताह की

(ग) लाजवंती ने हरो को रुपए लाकर दिए।

☐ सौ ☐ पाँच सौ ☐ दो सौ ☐ तीन सौ

4. दिए गए शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए। (Use the given words to make sentences.)

(क) व्याकुलता – .....

(ख) अंतिम – .....

(ग) स्वप्न – .....

(घ) अपेक्षा – .....

ज़रा सोचिए (Critical Thinking)

5. दहेज प्रथा मानवता के लिए एक अभिशाप है? कैसे? लिखिए।
(Is the dowry system a curse for humanity? How? Write.)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. यदि लाजवंती हरो के दु:ख का निवारण न करती तो क्या हरो समाज में दहेज प्रथा जैसी कुरीति का विरोध कर पाती? हाँ तो कैसे? नहीं तो क्यों नहीं? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
(If Lajwanti did not alleviate Haro's sorrow, would Haro be able to oppose evils like the dowry system in society? If yes, how? If not, why not? Explain in your own words.)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7. 'जो सुख त्याग में है, वह ग्रहण में कहाँ? भाव सहित तुष्टिकरण कर लिखिए।
(The joy that is in renunciation, where is it in acceptance? Write with explanation and satisfaction.)

आइए भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

8. दिए गए शब्दों का लिंग निर्धारित कीजिए। (Determine the gender of the given words.)

(क) लाजवंती – ..... (ख) मानवता – .....

(ग) रात – ..... (घ) अठन्नी – .....

(ङ) बरतन – ..... (च) यात्रा – .....

(छ) बुखार – ..... (ज) जीवन – .....

(झ) प्राण – ..... (ञ) सुख – .....

(ट) प्रभात – ..... (ठ) सहानुभूति – .....

9. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए। (Make adjectives from the given words.)

(क) ईमानदारी – ..... (ख) ठंड – .....

(ग) प्यास – ..... (घ) चिंता – .....

(ङ) जोश – ..... (च) नियम – .....

(छ) नगर – ..... (ज) काँटा – .....

10. दिए गए मुहावरों का अर्थ सहित वाक्य प्रयोग कीजिए।
(Use the given idioms in sentences along with their meanings.)

(क) आँखों का तारा – .....

.....

(ख) अँधेरे घर का उजाला – .....

.....

(ग) आँसू पोंछना – .....

.....

(घ) गंगा नहाना – .....

.....

11. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों में प्रयुक्त कारक का नाम लिखिए।
(Write the name of the case used for the underlined words in the given sentences.)

(क) बालक ने अपने पिता को ज़ोर-ज़ोर से पुकारा – ....

(ख) हे राम! तेरा ही सहारा है। – ....

(ग) युवती ने वैद्य को अठन्नी भेंट की। – ....

(घ) हरो ने लाजवंती को वास्तविकता बताई। – ....

12. दिए गए शब्दों की संधि कीजिए। (Perform the Sandhi (joining of words) for the given words.)

(क) दया + आनंद – ..... (ख) नै + इका – .....

(ग) सदा + एव – ..... (घ) पर + उपकार – .....

जरा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

13. लाजवंती की जगह आप होते तो हरो के साथ कैसा व्यवहार करते? कक्षा में चर्चा कर लिखिए। (If you were in place of Lajwanti, how would you behave with Haro? Discuss in class and write.)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

14. समाज से किन प्रथाओं को जड़ से मिटाने की आवश्यकता है? प्रत्येक प्रथा का नाम लिखिए। (Which practices need to be eradicated from society? Write the name of each practice.)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अध्याय 4

शल्य-चिकित्सा के जनक: सुश्रुत

(कहानी)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

चरक

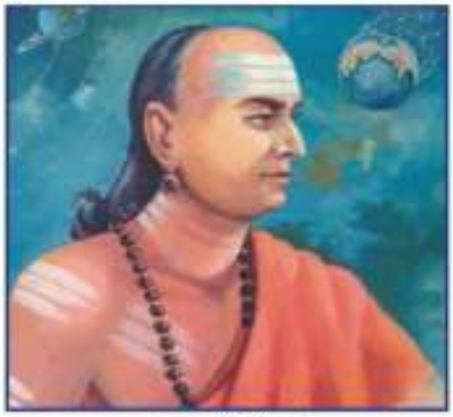

वराहमिहिर

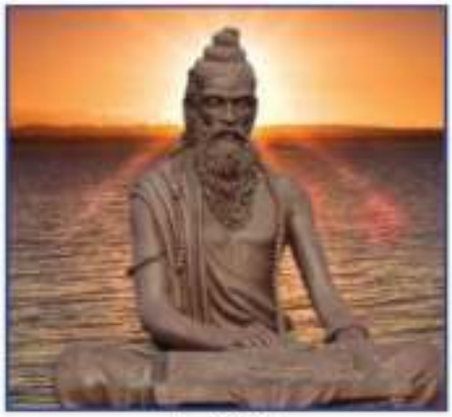

पतंजलि

वाग्भट्ट

धन्वंतरि

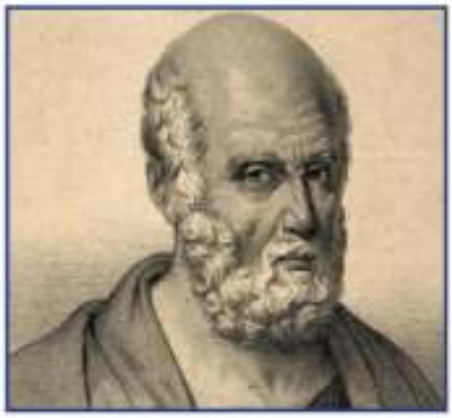

हिफोक्रेट्स

❖ उपरोक्त चित्रों को पहचान करके बताइए कि चिकित्सा के क्षेत्र में इनका क्या योगदान है?

कहानी परिचय (Story Preview)

नागरिकों के प्रयास से ही देश की प्रगति संभव है।

कठिन शब्द (Difficult Words)

यशस्वी शल्य क्रिया असाध्य वैभवशाली ओत-प्रोत भ्रांतियाँ

भारतीय चिकित्सा विज्ञान प्राचीन काल से ही श्रेष्ठता के गुण को हासिल किए हुए है। इस पवित्र भारत भूमि पर सुश्रुत, आत्रेय जीवक, चरक और वाग्भट्ट जैसे यशस्वी चिकित्सा शास्त्रियों का जन्म हुआ। ये सभी शल्य क्रिया के महान विचारक थे जिन्होंने असाध्य रोगों को सफलतापूर्वक ठीक कर दिखाया।

भारत की एक प्राचीन नगरी है– वाराणसी। गंगा की निर्मल धारा सहस्त्रों वर्षों से इसके आँचल में मचल-मचलकर बहती रही है। इस नगरी का अपना सैकड़ों वर्ष पुराना वैभवशाली इतिहास है। हमेशा से यह नगरी शिक्षा का बड़ा केंद्र रही है। प्राचीन काल में यह काशी राज्य की राजधानी थी।

आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले की बात है। गंगा तट से थोड़ी दूर एक पाठशाला थी। वहाँ आयुर्वेद की शिक्षा दी जाती थी। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ आते और शल्य-चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करते।

इस पवित्र मंदिर के द्वार केवल उनके लिए खुले थे जिनका मन मानव-सेवा और प्रेम से ओत–प्रोत होता था जिनमें साधना और कठोर परिश्रम करने की लगन होती थी।

इस पाठशाला के आचार्य थे– महर्षि सुश्रुत। शल्य-चिकित्सक के रूप में उनका यश चारों दिशाओं में दूर-दूर तक फैला हुआ था। वे स्वयं काशी के राजा दिवोदास के शिष्य थे। दिवोदास को भगवान धन्वंतरि का अवतार कहा गया है।

महर्षि विश्वामित्र के पुत्र आचार्य सुश्रुत के प्रारंभिक जीवन से हम सभी ऐतिहासिक रूप से अनभिज्ञ हैं, जिनके जीवन को लेकर कुछ भ्रांतियाँ प्रचलित हैं; जैसे- बाल्यकाल में वह गंगा की लहरों में खेले, तत्पश्चात् उन्होंने काशी के राजा और महान चिकित्सा शास्त्री दिवोदास की देख-रेख में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। अपने जीवनकाल में कई प्रकार की शल्य-तकनीकों की खोज करके उन्होंने अद्वितीयता हासिल की। उनके द्वारा की गई खोजें चिकित्सा शास्त्रियों के लिए प्रेरणा के रूप में उभरीं। उनके द्वारा रचित 'सुश्रुत संहिता' एक जीवंत प्रमाण है, जो कि प्राचीन भारत के चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अपने समय से बहुत आगे है। सुश्रुत-संहिता से हमें शल्य-चिकित्सा की विशद् जानकारी मिलती है। इसमें कुल मिलाकर 120 अध्याय हैं और इन्हें छह भागों में बाँटा गया है– सूत्रस्थान, निदानस्थान, शरीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान और उत्तरस्थान।

इस ग्रंथ में शल्य-चिकित्सा की विधियों और उसमें काम आने वाले यंत्रों तथा शस्त्रों के बारे में व्यापक जानकारी दी गई है। शरीर के किसी भाग में मवाद पड़ जाने पर चीरा लगाना आवश्यक होता है, यह महत्वपूर्ण तथ्य सुश्रुत से छिपा न था। उन्होंने इस बारे में स्पष्ट जानकारी दी है कि इस स्थिति में चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ। इसी तरह जब शरीर के कुछ अंग जलवृद्धि के कारण फूल जाएँ तो उनका जल सुई द्वारा कैसे खींच लेना चाहिए। यह विधि भी उपयुक्त रूप से बताई गई है। मूत्राशय की पथरी, भगंदर, बवासीर और मोतियाबिंद की शल्य-क्रिया के साथ-साथ, जरूरत पड़ने पर माँ के गर्भ में चीरा लगाकर शिशु को जन्म देने

की शल्य-क्रिया और दंत-चिकित्सा तथा अस्थि-चिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन भी सुश्रुत-संहिता में मिलता है। इसके अलावा काया शृंगार (प्लास्टिक सर्जरी) से जुड़े तरह-तरह के ऑपरेशन भी विस्तार से वर्णित हैं।

सुश्रुत-संहिता में शल्य यंत्रों की संख्या 101 बताई गई है। इन यंत्रों को हिंसक पशु तथा पक्षियों के मुँह के आकार के अनुसार नाम दिए गए हैं; जैसे– सिंहमुख (सिंह के मुँह जैसा), गृध्रमुख (गिद्ध के मुँह जैसा) ये यंत्र आधुनिक शल्ययंत्रों से किसी भी तरह कम न थे। इनके साथ ही 20 और शल्ययंत्र भी वर्णित हैं। इनके नाम हैं– मंडलाग्र, करपत्र, मुद्रिका, बृहिमुख आदि। ये शल्य औज़ार प्रायः लौह धातु या चाँदी से बनाए जाते थे। इन्हें इस ढंग से बनाया जाता था कि इनकी धार कभी कमज़ोर न पड़े और इनमें कभी जंग न लगे। इन्हें रखने के लिए खासतौर से लकड़ी के डिब्बे भी तैयार किए जाते थे।

टाँके लगाने के लिए त्वचा और विभिन्न ऊतकों की मोटाई और रचना को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के धागे भी विकसित किए गए थे। कुछ का आधार रेशम की डोर होती थी तो कुछ सूत से बनाए जाते थे। कुछ घोड़ों के बालों से। इसी प्रकार कई किस्म की सुईयाँ भी उपयोग में लाई जाती थीं– कुछ पतली, कुछ अधिक घुमाव लिए हुए, तो कुछ कम और कुछ बिल्कुल सीधी। उन दिनों तरह-तरह की रुई, रेशम और मलमल से बनी पट्टियों का भी प्रचलन था।

दुर्घटनाओं में अथवा शस्त्र के वार से फट गई आँतों के दो किनारों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली थी। इसके लिए वे एक किस्म के चींटों का उपयोग किया करते थे। फटी हुई आँत के दो किनारों को साथ मिलाकर उस पर चींटे छोड़ दिए जाते। वे चींटे अपने दाँतों से उस पर चिपक जाते, जिससे फटी हुई आँत के दो किनारे आपस में सिल-से जाते। अब चींटों का शेष भाग काटकर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस लिए जाते। कुछ ही दिनों में आँत का घाव भर जाता। साथ ही चींटों का सिर भी ऊतकों में अपने आप घुल-मिल जाता था।

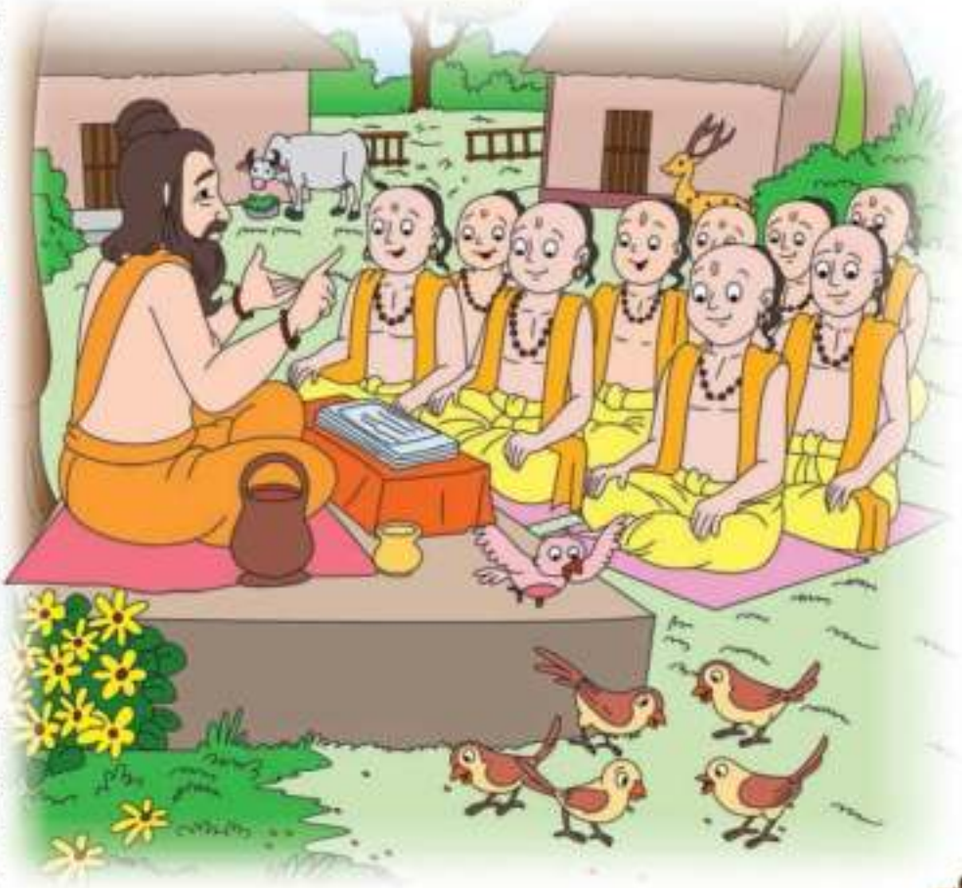

आजकल शल्य-चिकित्सक शरीर के भीतरी अंगों के टाँके लगाने के लिए भेड़ की आँत से बनाए गए धागे का उपयोग करते हैं। उद्देश्य यह रहता है कि टाँके भीतर-ही-भीतर घुल जाएँ जिससे टाँके निकालने के लिए कम-से-कम वह भाग दोबारा न खोलना पड़े। सुश्रुत-संहिता में शल्य-चिकित्सा

के लगभग हर महत्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी गई है; जैसे– ऑपरेशन के बाद क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए, रोगी का आहार कैसा होना चाहिए, घाव भर जाए इसके लिए कौन-कौन सी औषधियाँ देनी चाहिए? आदि।

प्राचीन भारत के चिकित्सकों को औषधि विज्ञान के बारे में भी जानकारी थी। उन्होंने बहुत-सी जड़ी-बूटियों की खोज की थी। साथ ही रसायन भी खोज निकाले थे। ये रोगी का दु:ख-दर्द दूर करने में काम आते थे।

शल्यक्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न हो, इसके लिए कुछ ऐसी सक्षम जड़ी-बूटियाँ भी खोज निकाली गई थीं जिनके देने से रोगी गहरी नींद में सो जाता था।

मानव शरीर के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वज़नदार वस्तु के साथ बाँधकर किसी छोटी-सी नहर में डाल दिया जाता था। इससे शरीर के ऊतक फूल जाते, तब झाड़ियों और लताओं से बने बड़े-बड़े ब्रुशों द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था। इससे शरीर के आंतरिक अंगों की रचना स्पष्ट हो जाती थी।

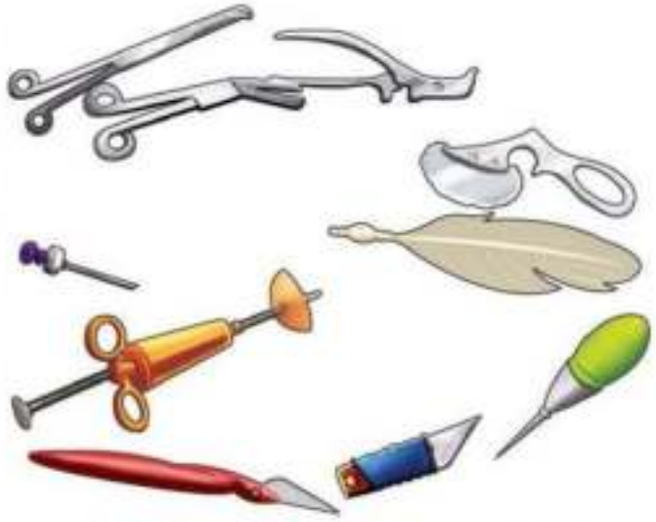

सुश्रुत जितने बड़े शल्य-चिकित्सक थे, उतने ही श्रेष्ठ गुरु भी थे। शल्यकला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल-फूल, पेड़-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाँचों और मलमल से बने मानव-पुतलों पर दिनोंदिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लंबा, कितना गहरा रखना है– इसका अभ्यास प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज जैसे फलों और सब्ज़ियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और उसे भरने के लिए क्या तकनीक अपनाएँ? यह प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता, जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अंदाज़ा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डंडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती थी जिसे शिष्य को सुई द्वारा बेधना पड़ता था। इसी तरह टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदरे चमड़े पर, जिस पर से बाल न हटाए गए हों, खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पट्टी बाँधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लिया जाता था।

इस प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने के बाद ही शिष्य के प्रशिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता। अब उसे किसी कुशल शल्य-चिकित्सक की देखरेख में रख दिया जाता था। वह तरह-तरह की शल्यक्रियाएँ देखता और उनसे सीखता जाता। फिर कुछ समय बाद जब वह पूरी तरह परिपक्व हो जाता, तब उसे गुरु की देखरेख में स्वयं ऑपरेशन करने की अनुमति दी जाती थी। इस तरह पूर्ण प्रशिक्षण और अनुभव पाकर ही वह पाठशाला से बाहर निकलता था।

सुश्रुत मूलत: शल्य-चिकित्सक थे किंतु उन्होंने क्षय रोग, कुष्ठ रोग, मधुमेह, हृदय रोग एवं विटामिन सी की कमी से होने वाले रोग- स्कर्वी के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी दी। ईसा से 600 वर्ष पूर्व और 1000 ई.

तक का समय भारतीय चिकित्सा विज्ञान के लिए स्वर्णिम युग था। आत्रेय, जीवक, चरक और वाग्भट्ट जैसे बहुत-से यशस्वी चिकित्सा शास्त्रियों ने भारत की पावन भूमि पर जन्म लिया। काशी के साथ-साथ नालंदा और तक्षशिला के प्राचीन विश्वविद्यालय भी सैकड़ों वर्षों से उच्चकोटि की शिक्षा के लिए विश्वविख्यात रहे। यहाँ दूर-दूर से विद्यार्थी आते और चिकित्सा विज्ञान में निपुण होकर मानव कल्याण की प्रतिज्ञा लेते। चिकित्सा विज्ञान के कुछ इतिहासकारों का तो यह भी कहना है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति के बहुत-से सिद्धांत प्राचीन भारतीय चिकित्सकों के विचारों पर ही आधारित हैं।

कहानी का सारांश (Summary of the Story)

The text praises ancient Indian medicine, featuring renowned figures like Sushruta, Atreya, Jivaka, Charaka, and Vagbhata. It depicts Varanasi as a key learning hub for Ayurveda and surgery. Sushruta, a renowned surgeon, made notable advancements with his "Sushruta Samhita," detailing surgical techniques, instruments, training methods, illustrating the impact of ancient Indian medicine on other medical traditions.

शब्दार्थ (Word Meaning)

पाठशाला	=	विद्यालय (School)
शल्य-चिकित्सा	=	चीर-फाड़ द्वारा इलाज (Surgery)
टाँके	=	त्वचा को सिलना (Stitches)
रुग्ण	=	बीमार, अस्वस्थ (Sick, Unwell)
जीवंत	=	जीता-जागता (Living)
प्रशिक्षण	=	ट्रेनिंग (Training)
परिपक्वता	=	समझदारी, पहचान करना (Maturity, Discrimination)
बेधना	=	किसी नुकीली चीज़ की सहायता से छेद या सूराख करना (To pierce or puncture with a sharp object)
प्राचीन काल	=	पौराणिक काल, कई शताब्दियों से पहले का समय (Ancient times)
आँत	=	अँतड़ी, पेट के भीतर की लंबी नली जिसमें भोजन की पाचन क्रिया होती है। (Intestine, a long tube inside the stomach where digestion occurs)

उच्चारण करें (Pronounce)

वाग्भट्ट शल्य-क्रिया सुश्रुत सूत्रस्थान चिकित्सा शास्त्री परिपक्वता

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को चिकित्सा क्षेत्र में किए गए विभिन्न चिकित्सकों और प्रयासों के बारे में जानकारी दें।
Teachers should provide information to students in the classroom about various physicians and efforts made in the field of medicine.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answer the given questions.)

(क) आचार्य सुश्रुत को किस कला में प्रवीणता हासिल थी?

(ख) चिकित्सा शास्त्री दिवोदास का सुश्रुत के जीवन काल में क्या योगदान था?

(ग) सुश्रुत संहिता में शल्य यंत्रों की संख्या कितनी बताई गई है?

(घ) शल्य क्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न देने के लिए किन उपायों को अपनाया जाता था?

(ङ) भारतीय चिकित्सा काल का स्वर्णिम युग किसे माना गया है?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Write the answers to the given questions.)

(क) प्रस्तुत पाठ में वाराणसी के महत्व को किस प्रकार प्रदर्शित किया गया है?

.....

(ख) प्राचीन भारत के कौन-कौन से विद्यालय उच्च कोटि की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे?

.....

(ग) सुश्रुत द्वारा खोजी गई शल्य यंत्रों की संख्या कितनी बताई गई है, आकार के अनुसार नाम भी बताइए।

.....

(घ) सुश्रुत संहिता में चिकित्सा विज्ञान के किन-किन महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी दी गई है?

.....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (Fill in the blanks in the given sentences.)

(क) सभी चिकित्सा शास्त्री ..... के महान विचारक थे।

(ख) महर्षि विश्वामित्र ..... के पिता थे।

(ग) विभिन्न प्रकार की चिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन ..... में मिलता है।

(घ) प्राचीन भारत के चिकित्सकों को ..... विज्ञान के बारे में जानकारी थी।

(ङ) यूनानी पद्धति के बहुत-से सिद्धांत ..... चिकित्सकों के विचारों पर ही आधारित हैं।

4. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark the correct option with a (✓) check mark.)

(क) प्रस्तुत अध्याय में कौन-सी कला की चर्चा की गई है?

☐ शल्य क्रिया ☐ द्युत क्रिया ☐ क्रीड़ा ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) आचार्य सुश्रुत को किस गुरु से शिक्षा प्राप्त हुई?

☐ विश्वामित्र ☐ कालिदास ☐ दिवोदास ☐ वाग्भट्ट

(ग) प्रसिद्ध ग्रंथ सुश्रुत संहिता को कितने अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है?

☐ 130 ☐ 110 ☐ 120 ☐ 140

(घ) शल्य क्रिया के दौरान रोगी के ऊतकों को किससे अलग कर दिया जाता था?

☐ लकड़ी से ☐ झाड़ू से ☐ कंघी से ☐ ब्रुश से

(ङ) आचार्य सुश्रुत किस क्षेत्र में निवासरत थे?

☐ वाराणसी ☐ उज्जयिनी ☐ पाटलिपुत्र ☐ इनमें से कोई नहीं

5. सही कथन पर (✓) अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।
(Mark the correct statement with a (✓) or the incorrect statement with a (✗).)

(क) आचार्य सुश्रुत की पाठशाला गंगा तट पर स्थित थी। ☐

(ख) सुश्रुत संहिता में शल्य-चिकित्सा की जानकारी मिलती है। ☐

(ग) महर्षि सुश्रुत ने कैंसर उपचार की औषधियों का भी निर्माण किया था। ☐

(घ) अधूरे प्रशिक्षण के उपरांत ही सुश्रुत अपने शिष्य रख लेते थे। ☐

(ङ) आचार्य सुश्रुत के पास विद्यार्थी दूर-दूर से प्रशिक्षण के लिए आते थे। ☐

6. सही मिलान कीजिए। (Match correctly.)

(क)	दिवोदास	(i)	गंगातट के समीप
(ख)	पाठशाला	(ii)	चिकित्सा शास्त्री
(ग)	सुश्रुत	(iii)	वाराणसी
(घ)	प्राचीन नगरी	(iv)	शल्य चिकित्सा

ज़रा सोचिए (Critical Thinking)

7. वर्तमान समय में शल्य चिकित्सा सेवा न होकर पेशा बन गया है। इस कथन की पुष्टि संवाद द्वारा कीजिए।
(The current time has made surgical service a profession rather than a service. Confirm this statement through dialogue.)

ज़रा भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

8. दिए गए कर्तवाच्य वाक्यों को कर्मवाच्य वाक्यों में परिवर्तित कीजिए।
(Convert the given active voice sentences into passive voice sentences.)

(क) "झाड़ियों और लताओं से बने ब्रुश कृतकों को शरीर से अलग करते हैं।"

.....

(ख) "सुश्रुत ने हर महत्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी है।"

.....

(ग) "आचार्य सुश्रुत ने बहुत-सी जड़ी-बूटियों की खोज की थी।"

.....

9. दिए गए शब्दों को विच्छेद करके लिखिए। (Write the given words by breaking them up.)

(क) आयुर्वेद – .....

(ख) चिकित्सक – .....

(ग) विश्वामित्र – .....

(घ) परिपक्वता – .....

(ङ) महत्वपूर्ण – .....

10. दिए गए शब्दों से दो-दो अर्थ लिखकर वाक्य निर्माण कीजिए।
(Write two meanings for the given words and construct sentences.)

(क) गंगा – ....

– ....

(ख) काशी – ....

– ....

(ग) किनारा – ....

– ....

11. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।
(Write three synonyms for each of the given words.)

(क) चिकित्सक – ....

(ख) भगवान – ....

(ग) वैभव – ....

(घ) हिंसक – ....

(ङ) दुर्घटना – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

12. पाठ में प्रस्तुत शल्य चिकित्सा के दौरान उपयोग में लाए जाने वाले शल्य-यंत्रों के चित्र बनाइए एवं उनके नाम भी लिखिए।
(Draw the pictures of surgical instruments used during the surgery presented in the lesson and write their names as well.)

ज़रा विमर्श लगाइए (Brain Storming Activity)

13. ऐसे प्रमुख चिकित्सकों के बारे में जानकारी एकत्रित कर कक्षा में चर्चा करें जिन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र को अपने योगदान से प्रकाशमय किया।
(Collect information about prominent doctors who have illuminated the field of medicine with their contributions and discuss in class.)

14. चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार पाने वाले व्यक्तियों के नाम लिखिए।
(Write the names of people who have received the Nobel Prize in the field of medicine.)

15. दिए गए शास्त्रों के लेखकों के बारे में जानकारी एकत्रित करके लिखिए।
(Collect and write information about the authors of the given scriptures.)

अष्टांग हृदयम –

भाव प्रकाश –

माधव निदान –

शारंगधर संहिता –

योगदर्शन –

For Full PDF
Click The Link Below